

---

# Shri Vishvanathastavah

श्रीविश्वनाथस्तवः

## Document Information

---

Text title : vishvanAthastavah

File name : vishvanAthastavaH.itx

Category : shiva

Location : doc\_shiva

Author : Yogisha Mishra

Proofread by : Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com

Description/comments : From Shivastotraratnakara, Gita press

Latest update : October 1, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 30, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Vishvanathastavah

---

## श्रीविश्वनाथस्तवः

---



भवानीकलत्रं उरे शूलपाणिं  
शरण्यं शिवं सर्पहारं गिरीशम् ।  
अज्ञानान्तकं भक्तविज्ञानदं तं  
भजेऽहं मनोऽभीष्टरं विश्वनाथम् ॥ १ ॥

भवानी जिनकी पत्नी हैं, जो पार्षोका उरए करनेवाले हैं, जिनके  
हाथमें त्रिशूल है, जो शरणागतकी रक्षा करनेमें प्रवीण हैं,  
कल्याणकारी हैं, सर्प जिनका डार है, जो गिरीश (डेवासगिरिके स्वामी)  
हैं, जो अज्ञानको नष्ट करनेवाले तथा भक्तोंको ज्ञान-विज्ञानसे  
समृद्ध बनानेवाले हैं, जैसे उन मनोवांछित फल प्रदान करनेवाले  
विश्वके स्वामी भगवान विश्वनाथका मैं भजन करता हूँ ॥ १ ॥

अजं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं गुणज्ञं  
दयाज्ञानसिन्धुं प्रभुं प्राणनाथम् ।  
विभुं भावगम्यं भवं नीलकण्ठं  
भजेऽहं मनोऽभीष्टदं विश्वनाथम् ॥ २ ॥

जो अज (अजन्मा) हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, जो गुणज्ञ  
हैं, दया और ज्ञानके सिन्धु हैं, सर्वसमर्थ तथा प्राणनाथ हैं,  
विभु (व्यापक) हैं, जिनमें भक्तिभावसे प्राप्त किया जा सकता है,  
जो सृष्टिके उत्पादक हैं, जिनका कण्ठ नीला है, जैसे मनोवांछित  
फल प्रदान करने- वाले विश्वके स्वामी भगवान विश्वनाथका मैं  
भजन करता हूँ ॥ २ ॥

सिताभस्मभूषार्यिताभासुराङ्गं  
श्मशानालयं त्र्यम्बकं मुण्डमालम् ।  
कराभ्यां दधानं त्रिशूलं कपालं  
भजेऽहं मनोऽभीष्टदं विश्वनाथम् ॥ ३ ॥

जिनका शरीर चिताके लस्मरूपी अलंकारसे अलंकृत अवेव दीप्तिमान  
 है, जिनका निवास श्मशान है, जिनके तीन नेत्र हैं, जो मुण्डोंको  
 माला धारण किये रहते हैं । जो दो छाथोंमें त्रिशूल और कपाल धारण  
 किये रहते हैं, जैसे मनोवांछित फल प्रदान करनेवाले विश्वके स्वामी  
 भगवान विश्वनाथका मैं भजन करता हूँ ॥ ३ ॥

अधध्रं मलाभैरवं भीमदंष्ट्रं  
 निरीडं तुषारायलाभाङ्गगौरम् ।  
 गजारिं गिरौ संस्थितं यन्द्रयूडं  
 भजेडडं मनोडभीष्टदं विश्वनाथम् ॥ ४ ॥

जो पापोंके विनाशक हैं, जो मलाभैरव हैं, जिनके दाँत भयानक  
 हैं, जो समस्त कामनाओंसे रहित हैं, जिनका श्रीविग्रह बर्फके  
 पर्वतका-सा गौर है और जिन्होंने गजासुरका विनाश किया है,  
 जो पर्वतपर रहते हैं, जिनके सिरपर बालोंके जूट (जूडः) -में  
 यन्द्रमा विराजमान है, जैसे मनोवांछित फल प्रदान करनेवाले विश्वके  
 स्वामी भगवान विश्वनाथका मैं भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

विधुं भालदेशे विभातं दधानं  
 भुजङ्गेशसेव्यं पुरारिं मडेशम् ।  
 शिवासंगृहीतारुद्धदेडं प्रसन्नं  
 भजेडडं मनोडभीष्टदं विश्वनाथम् ॥ ५ ॥

जो भालदेशमें दीप्तिमान यन्द्रमाके धारण किये हुए हैं, जिनकी सेवा  
 सर्पराज करते रहते हैं, जो त्रिपुरारि तथा मडान ईश हैं, जिनके  
 शरीरके आधे भागको शिवा (माता पार्वतीज्) -ने अधिगृहीत किया है,  
 जो सदा प्रसन्न रहते हैं, जैसे मनोवांछित फल प्रदान करनेवाले  
 विश्वके स्वामी भगवान विश्वनाथका मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

भवानीपतिं श्रीजगन्नाथनाथं  
 गणेशं गृहीतं बलीवर्दथानम् ।  
 सदा विघ्नविच्छेदहेतुं कृपालुं  
 भजेडडं मनोडभीष्टदं विश्वनाथम् ॥ ६ ॥

जो भवानीपति हैं, जो संसारके नाथोंके नाथ (स्वामी) हैं, जो गणोंके  
 ईश हैं, जिन्होंने बौलको अपना वाहन चुना है, जिनकी कृपासे सदा

विघ्नोका विच्छेद होता रहता है, जो कृपालु हैं, जैसे मनोवांछित  
 कृल प्रदान करनेवाले विश्वके स्वामी भगवान् विश्वनाथका मैं भजन  
 करता हूँ ॥ ६ ॥

अगम्यं नटं योगिभिर्दण्डपाणिं  
 प्रसन्नाननं व्योमकेशं भयघ्नम् ।  
 स्तुतं ब्रह्ममायादिभिः पादकञ्चं  
 भजेऽहं मनोऽभीष्टं विश्वनाथम् ॥ ७ ॥

जो योगिनोके लिये भी अगम्य हैं, जो नाट्य (नृत्य) - कलामें प्रवीण  
 हैं, दण्डपाणि हैं, प्रसन्नमुख हैं तथा जिनके केश (किरण)  
 व्योम (आकाश) -तक व्याप्त हैं, जो भयोंका नाश करनेवाले हैं,  
 जिनके यरणकमलोंको स्तुति ब्रह्मा और माया आदि करते रहते हैं; जैसे  
 मनोवांछित कृल प्रदान करनेवाले विश्वके स्वामी भगवान् विश्वनाथका  
 मैं भजन करता हूँ ॥ ७ ॥

मूडं योगमुद्राकृतं ध्याननिष्ठं  
 धृतं नागयज्ञोपवीतं त्रिपुण्ड्रम् ।  
 दधानं पदाम्भोजनम्राय कामं  
 भजेऽहं मनोऽभीष्टं विश्वनाथम् ॥ ८ ॥

जो आनन्दमूर्ति हैं, योगमुद्रा धारण किये हुए हैं तथा ध्यानयोगमें  
 निरत हैं, जिनोंने सर्पका यज्ञोपवीत और त्रिपुण्ड्र धारण कर  
 रखा है, यरणकमलोंमें जुके भक्तको उसका अभीष्ट प्रदान करते  
 हैं, जैसे मनोवांछित कृल प्रदान करनेवाले विश्वके स्वामी भगवान्  
 विश्वनाथका मैं भजन करता हूँ ॥ ८ ॥

मूडस्य स्वयं यः प्रभाते पठेत्त्रा  
 दृष्टिस्थः शिवस्तस्य नित्यं प्रसन्नः ।  
 शिरस्थं धनं मित्रवर्गं कलत्रं  
 सुपुत्रं मनोऽभीष्टमोक्षं ददाति ॥ ९ ॥

जो मनुष्य प्रभातकालमें भगवान् मूड (विश्वनाथ) -के इस स्तवका  
 पाठ करता है, उसके हृदयमें स्थित होकर शिव उसपर सदैव  
 प्रसन्न रहते हैं और उसे शिरस्थायी सम्पत्ति, मित्रवर्ग, पत्नी,  
 सत्पुत्र, मनोवांछित वस्तु तथा मोक्ष प्रदान करते हैं ॥ ९ ॥

योगीशमिश्रमुष्पङ्कुजनिर्गतं यो  
विश्वेश्वराष्टकमिदं पठति प्रभाते ।  
आसाद्य शङ्करपदाम्बुजयुग्मभक्तिं  
भुङ्क्त्वा समृद्धिमिड याति शिवान्तिकेऽन्ते ॥ १० ॥

जो व्यक्ति योगीशमिश्रके मुष्पङ्कमलसे निर्गतं एस विश्वेश्वराष्टक  
(विश्वनाथस्तव) -का प्रभातवेलामें पाठ करता है, वल एस लोकमें  
भगवान् शंकरके यराङ्कमलोंकी भक्ति प्राप्त करके समृद्धिका  
भोग प्राप्त करता है और अन्तमें भगवान् शिवका सांनिध्य प्राप्त  
कर लेता है ॥ १० ॥

॥ एति श्रीयोगीशमिश्रविरचितः श्रीविश्वनाथस्तवः सम्पूर्णः ॥

॥ एस प्रकार श्रीयोगीशमिश्रविरचित श्रीविश्वनाथस्तव सम्पूर्णं दुग्मा ॥

Proofread by Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com

---

—  
*Shri Vishvanathastavah*

pdf was typeset on August 30, 2023

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

